गुरमति साहित्य में कबीर और अन्य कवियों का योगदान

गौरव यादव

ठा. बीरी सिंह महाविद्यालय, टूण्डला, फिरोजाबाद

मोबाइल नं. 7838976871

ई–मेल : yadangrv2805@ gmail.com

शोध सारांश

सिख धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' में निर्गुण संतों– कबीरदास, रैदास, पीपा, धन्ना आदि के साथ सगुण भक्तों– रामानंद, सूरदास, मीराबाई, सूफी शेख फरीद आदि संत कवियों को भी संकलित किया गया है। इन सभी में कबीरदास जी का विशिष्ट स्थान है, क्योंकि 'आदिग्रंथ' में सिख गुरुओं के प्राय: बाद कबीर–वाणी को जगह मिली है तथा गैर सिख संतों में सर्वाधिक संकलित रचनाएँ भी कबीर की ही हैं। 'आदिग्रंथ' कबीर–वाणी का इतना व्यापक संकलन प्रस्तुत करने वाला एकमात्र प्राचीनतम ज्ञात स्रोत है।

'आदिग्रंथ' में संकलित विभिन्न संतों की टिप्पणियों तथा कबीर की स्वयं की कविताई के अंत:साक्ष्यों से कबीर संबंधी ऐतिहासिक तथ्यों पर भी प्रकाश पड़ता है। इसमें कबीर अपने परिचित 'अक्खड व्यक्तित्व' निर्गुणवादी सिद्धातों के साथ उपस्थित होते हैं, जिनमें अपनी अभिज्ञानात्मक अनुभूति के उद्घाटन, सतगुरु महिमा की प्रतिष्ठा, ज्ञान द्वारा माया से मुक्ति, द्वैत एवं अद्वैत से विलक्षण ब्रह्म की अवधारणा का प्रतिपादन और मानव जनित समस्त विषमताओं, जाति–सम्प्रदाय आधारित विभेदों ब्राह्याचारों आदि के खंडन की चेतना तथा प्रेमाधारित समरस समाज के निर्माण की बैचेनी है। इस प्रकार 'आदिग्रंथ' में कबीर वाणी के संकलन के विविध आयामों पर अध्ययन की अनेक सम्भावनाएँ विद्यमान हैं।

बीज शब्द :– गुरमति, गुरुग्रंथ साहिब, कबीर वाणी, सिख, संतकवि आदि।

गुरमति साहित्य

गुरमत का शाब्दिक अर्थ है गुरु का मत अर्थात् गुरु के नाम पर संकल्प। यह सिखों द्वारा किसी भी धार्मिक, सामाजिक व राजनैतिक मुद्दों से संबंधित गुरु के नाम पर आयोजित सभा में अपनाई गई सलाह या संकल्प है। अठारहवीं शताब्दी के आस–पास सिखों ने बैसाखी और दिवाली के दिन अमृतसर के अकाल तख्त पर इकट्ठे हुए और गुरुग्रंथ साहिब की उपस्थिति में एक पाठ्यक्रम की योजना बनाने के लिए एक साथ परामर्श लिया, विचार–विमर्श से निकलने वाला अंतिम निर्णय गुरमत का था। इसने खालसा की सामान्य इच्छा का प्रतिनिधित्व किया और इसने गुरु की मंजूरी को आगे बढ़ाया, सभा ने गुरु ग्रंथ साहिब के अधिकार को निभाया।

सिख पंथ का आधिकारिक धर्मग्रंथ 'गुरुग्रंथ साहिब' है। दसवें गुरु गोविंद सिंह के समय, 1708 ई. में व्यक्तिगत गुरु–परंपरा का अंत हुआ, तब से गुरु पद 'ग्रंथ साहित्य' में ही निहित हो गया और ग्रंथ को 'शब्द गुरु' का दर्जा मिला, जो दुनिया भर में विभिन्न धर्मों में एक अनूठा दृष्टांत है। 'ग्रंथ साहिब' तदयुगीन राजनीतिक–सामाजिक परिस्थितियों के विविध चित्रों के साथ मध्यकालीन भक्ति–आंदोलन में अंतर्निहित व्यापक वैचारिकी, दर्शन, अध्यात्म, सत्संग आदि का सरस दस्तावेज है तो संत–कवियों की रचनाओं के अपेक्षाकृत निरपेक्ष प्रामाणिक संकलनों के कारण इसका साहित्यिक महत्व भी है। इस प्रकार यह भारतीय साहित्यिक

परम्परा का एक रत्नकोष है जिसमें सिख गुरुओं के अलावा विभिन्न क्षेत्रों, विविध विचार–सरणियों, भिन्न जाति–धर्म के संतो की बानियों को श्रद्धापूर्वक समाहित किया गया है ।

'गुरुग्रंथ साहिब' का प्रारंभिक नाम 'ग्रंथ साहिब' था, किंतु आगे दसवें गुरु गोविंद सिंह कृत 'दसम ग्रंथ' से भेद दर्शाने के लिए इसे 'आदिग्रंथ' कहा गया, जिसका अभिप्राय है कि सिख परम्परा का यह आदिग्रंथ है ।

'गुरुग्रंथ साहिब' समस्त मानव समुदाय के लिए एक सार्वभौगिक साधना–पद्धति का प्रतिपादन करता है । यह हर प्रकार के आचारवाद, रूढ़िवाद, प्रतीकवाद को नकारता है तथा ईश्वर व मनुष्य के बीच किसी भी तरह के आडम्बरों का विरोधी है । 'ग्रंथ साहिब' सच्चे व ईमानदार श्रम को महत्व देता है तथा संन्यास व वैराग्य की निंदा करता है । इस प्रकार यह श्रमिक एवं ग्रहस्थों का धर्म प्रतिपादित करता है । यह स्त्रियों को पुरुषों से हीन नहीं मानता । यह हिंदू वर्णाश्रमवाद, जातिवाद, छुआछूत का विरोधी है तथा जन्म, स्थान, लिंग आदि के आधार पर भेदभाव को नकारता है । 'गुरुग्रंथ साहिब' कर्म, भक्ति तथा ज्ञान का संतुलन प्रतिपादित करता है । शरीर की सार्थकता जहाँ परिवार–समाज की भलाई हेतु सत्कर्मों में है, वही मन को ईश्वर की ओर उन्मुख होना चाहिए, सेवाभाव इसका संदेश है ।

गुरमति साहित्य में कबीर : योगदान एवं प्रयोजन

'आदिग्रंथ' में सिख परम्परा के बाहर के जिन संत कवियों को जगह मिली है, उनमें कबीर जी की विशेष स्थिति दो कारणों से है । प्रथम तो यह कि विभिन्न रोगों के अंतर्गत गुरु–बानियों के ठीक बाद प्राय: कबीर की बानियों को रखा गया है । ऐसा 'सलोकों' के अंतर्गत भी देखा जा सकता है । दूसरा यह कि विभिन्न गैर सिख संतों में कबीर की रचनाएँ सर्वाधिक हैं ।

'आदिग्रंथ' में सत्रह विभिन्न रागों–सिरी राग, आसा, सूही तिलंग, बिलावल, मारु, केदारा, भैरो, बसंत, सारंग, सोरठ, गउडी, धनाश्री तथा परभाती के अंतर्गत कबीरदास के तीन लम्बे पदों– बावन अखरी, थितिं और वार सत सहित कुल 228 पदों के साथ 243 श्लोकों को संकलित किया गया है । यदि शेष अन्य गैर सिख संतों की रचनाओं को मिला भी दें, तब भी कबीरदास की संकलित रचनाओं की संख्या उनसे अधिक है । हालांकि कबीरदास की समस्त रचनाओं को 'आदिग्रंथ' में जगह नहीं मिली है।

कबीर के अध्ययन में आदिग्रंथ का महत्व

कबीर के अध्ययन के संदर्भ में 'आदिग्रंथ' के महत्व को दो स्तरों पर रेखांकित किया जा सकता है । प्रथम स्तर कबीर की रचनाओं के प्रामाणिक पाठ से सम्बद्ध है । हाल ही में प्राप्त 582 ई. की 'फतेहपुर पांडुलिपि (पद सूरदास जी का), जिसमें कबीर के मात्र पंद्रह पद संकलित हैं, को छोड़कर 'आदिग्रंथ' उनकी कविताई का सम्भवतः एकमात्र प्राचीनतम संकलन है जिसकी पुरानी और ज्ञात तिथियों वाली पांडुलिपियाँ भी उपलब्ध हैं । कबीरदास की परम्परागत निधन तिथि 1518 ई. के सौ वर्षों के भीतर संकलित होने के कारण 'आदिग्रंथ' (1604 ई. संकलन काल) में संग्रहित उनकी रचनाओं की प्रामाणिकता अन्य परवर्ती स्रोतों की अपेक्षा निर्विवाद है । पर जैसा कि हम देख चुके हैं, 'आदिग्रंथ' के संकलन के पीछे भी एक दीर्घकालीन प्रक्रिया रही है । तब एक स्वाभाविक प्रश्न यह उठता है कि सिख साहित्यिक परम्परा में कबीर को कब समाहित किया गया?

एक मान्यता के अनुसार कबीर की रचनाओं को स्वयं गुरु नानकदेव ने सिख परम्परा में अंगीकृत किया । साक्ष्य स्वरूप बताया जाता है कि परवर्ती 'जनम साखियों के अनुसार नानकदेव कबीर से मिल चुके थे तथा उनके प्रति श्रद्धा भी रखते थे । दूसरे, उनकी कविताई के स्वरूप एवं वैचारिक साम्य को भी इस संदर्भ में रेखांकित किया जाता है, जैसे कि गुरु के महत्व को दोनों इस प्रकार व्यक्त करते हैं :–

कहु नानक निसचौ धियावै ।
बिनु सतिगुर बाट न पावै ॥ **– नानक देव**

बिनु सतिगुर बाट न पाई ।
कछु कबीर समझाई ॥
– कबीर

किंतु ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर कबीर और गुरुनानक का मिलना असंगत प्रतीत होता है । दूसरे यह कि अपनी बानियों में नानकदेव ने शेख फरीद की तरह कबीर का नामोल्लेख भी नहीं किया है । 'आदिग्रंथ' में कबीर का प्रथम बार उल्लेख एवं उन पर टिप्पणी करने वाले सिख गुरु अमरदास थे 'नामा छीबा कबीरू जोलाहा पूरे गर ते गति पाई । तीसरे यह कि सिख साहित्य परम्परा में 'गोयंदवाल पोथी' में ही, जिसका निर्माण गुरु अमरदास के समय हुआ, सर्वप्रथम कबीर की रचनाओं को संकलित किए जाने के संकेत मिलते हैं । इस आधार पर कुछ लोगों का मानना है कि सिख साहित्य परम्परा में कबीर को तीसरे गुरु अमरदास के समय ही जगह मिली होगी ।

जो भी हो, कबीर की रचनाओं के विभिन्न स्रोतों– बीजक, सर्वांगियों, पंचवानियों आदि के मद्देनजर यह स्पष्ट हो जाता है कि कबीर की सभी रचनाओं को 'आदिग्रंथ' में जगह नहीं मिली है । गैर सिख परम्पराओं को यदि छोड़ भी दें तो स्वयं 'गोयंदवाल पोथी' में संकलित कुछ कबीर– बानियों को भी 'ग्रंथ' के संकलनकर्त्ता ने छोड़ दिया है । इसके अतिरिक्त 'करतार पुर वाली बीड़ में भी कबीर के चार पदों को मिटाए जाने के साक्ष्य मिलते हैं । अन्य संकलनों, यथा 'कबीर ग्रंथावली' तथा 'बीजक', जिनके आधार–स्रोत क्रमशः दादूपंथी और कबीर पंथी पांडुलिपियाँ हैं– से तुलना करने पर उनमें तथा 'आदिग्रंथ' में संकलित कबीर की रचनाओं में भेद और साम्य को बखूबी समझा जा सकता है । जाहिर है कि 'ग्रंथ' के संकलन के दौरान चयन की कुछ दृष्टियाँ कार्यरत थीं ।

आदिग्रंथ में कबीर वाणी के संकलन की प्रयोजनीयता

'आदिग्रंथ' के संदर्भ में एक प्रश्न अनायास ही उठता है कि जब यह सिख मत का अधिकारिक धर्मग्रंथ है तो कबीरदास सरीखे गैर सिख संत को इसमें समाहित करने के पीछे संकलनकर्त्ता के कौन–से उद्देश्य थे? आधुनिक युग में इसके निहितार्थों को समझने का प्रयत्न कई अध्येताओं ने किया है ।

एक मान्यता के अनुसार 'आदिग्रंथ' में कबीर वाणी के संकलन का आधार कबीर तथा सिख गुरुओं के विचारों, सिद्धांतों और शिक्षाओं में समानता है, जैसे– सार्वभौमिक–सार्वकालिक निर्गुण निराकार ब्रह्म की अवधारणा, जाति–सम्प्रदाय विरोध, वैयक्तिक रहस्यवादी साधना, सतगुरु में आस्था इत्यादि, जिससे सिख परम्परा की मानसिकता एवं उसकी उत्प्रेरणाओं को बल मिलता है । ऐसा अनुमान किया जाता है कि सम्भवतः इसी कारण कबीरदास की चयनित रचनाओं को ही 'ग्रंथ' में जगह मिली, जिससे उनके हवाले से सिख मत के सिद्धांतों को पुष्टि एवं प्रामाणिकता मिल सके ।

'आदिग्रंथ', 'अकाल परुख' की अवधारणा प्रतिपादित करता है तथा 'सतिनाम सुमिरन' इसकी उपासना के केंद्र में है । ईश्वरीय 'नाम' के सुमिरन का महत्व कबीरदास के यहाँ भी है । 'नाम जप' की महिमा बखानते हुए गुरु अर्जुनदेव कबीर सहित कई अन्य संत आत्माओं का उल्लेख करते हैं, जो नाम सुमिरन के माध्यम से 'उद्धार' पा गए:

सुणि सखी मन जपि पिआर । उधरिया कहि एक बार ।
कबीर धिआइओ एक रंग । नामदेव हरि जीउ बसहि संग ।
रविदास धिआए प्रभ अनूप । गुरु नानक देव गोविंद रूप ॥

सिख मत तथा कबीर दोनों ने ब्रह्म के विभिन्न नामों–राम, हरि गोविंद, निरंजन, अल्लाह, खुदा, रहीम आदि की महत्ता बताई है, जिनके सुमिरन से 'सहज' ही साधना की जा सकती है । जाहिर है कि उपासना–पद्धति के आलोक में कबीर सिख सिद्धांतों के निकट दिखाई देते हैं ।

वैचारिक धरातल पर साम्य का दूसरा स्तर जाति, धर्म, सम्प्रदाय के आधार पर मानवता मात्र के विभाजनों को नकारने में है । नानकदेव कहते हैं कि ईश्वर के द्वार पर जाति नहीं पूछी जाती : 'जाणहु जोति न पूछहु जाती आगे जाति न हे' तो कबीर के अनुसार सारे जीवों की उत्पत्ति 'ब्रह्म–बिंदु' से होती है, इसलिए जन्म–कुल अप्रासंगिक है :

गरभ वास महि कुलु नहीं जाती । ब्रह्म बिंदु ते सभ उतपाती ॥
कहु रे पंडित बामन कबके हुए । बामन कहि कहि जनमु मत खोए ।।
जौ तूं ब्राह्मणु ब्रह्मणी जाइआ तउ आन बाट काहे नहीं आइआ ।।
तुम कत ब्राह्मण हम कत सूद। हम कत लोहू तुम कत दूध ।।
कहु कबीर जो ब्रह्मु बीचारै । सो ब्राह्मणु कहिअतु है हमारै ।।

इसी तरह वेद– कुरान के नकार, सतगुरु महिमा, वैयक्तिक रहस्यवाद इत्यादि के संदर्भ में भी विचारगत साम्य को रेखांकित किया जा सकता है । उल्लेखनीय है कि कबीर सरीखे कई अन्य गैर सिख संतों की बानियों के संकलन के बावजूद संकलनकर्त्ता ने 'आदिग्रंथ' की मूल विषय–वस्तु की निरंतरता का निर्वाह करते हुए सैद्धांतिक सामंजस्य बनाए रखने में सफलता पाई है ।

आदिग्रंथ में संकलित कबीर वाणी : विषय–वस्तु और दर्शन

कबीर वाणी में कुछ इस प्रकार की अंतर्वस्तु और दर्शन दिखाये देते हैं । यहाँ हमारा मूल सरोकार 'आदिग्रंथ' में संकलित कबीर की रचनाओं से है । निर्गुणवादी वैचारिक विशिष्टताओं को धारण करते हुए भी कबीर की मौलिकता इसमें है कि उन्होंने अपने व्यक्तित्व एवं अनुभूत सत्य के आलोक में अपने सिद्धांतों को दृढ़तापूर्वक अभिव्यक्ति दी है । उनके यहाँ अभिज्ञानात्मक अनुभूति का क्षण अचानक आता है–

कबीर सतिगुर सूरमे बाहिआ बानु जु एकु ।
लागत ही भुइ गिरि परिआ परा करेजे छेकु ।

सतगुरु की कृपा हुई, उसने 'शबद–बाण' मारा और साधक का कलेजा बिंध गया । इस अनुभूति के साथ ही सब कुछ बदल गया । जिस पर यह अनुकम्पा नहीं होती, उसका जीवन व्यर्थ चला जाता है: 'बारह बरस तो बालपन में बीत जाते हैं, बीस–तीस की अवस्था तक न तप होता है, न पूजा। जब वृद्ध हुए तब पछताने के सिवा बचता क्या है? मेरा–मेरा कहते जीवन गुजर जाता है और अंततः सारी शक्ति चूक जाती है । यह 'मेरा–मेरा' माया का वशीकरण है, जिसकी 'टाटी' 'ज्ञान की आँधी' से उड़ती है और तब आध्यात्मिक जागरण का क्षण आता है, जो जीव को बंधन मुक्त करता है ।

कबीर का ब्रह्म सार्वभौमिक सबके हृदय का वासी है । इसलिए उसकी खोज अंततः अपने भीतर होनी चाहिए, जो शुद्ध अंतःकरण से ही सम्भव है । कबीर ने उसे बार–बार खोजा और पाया है: आत्मानुभूति प्राप्त की है । जब ब्रह्म अंतःवासी है तो उसे बाहर कैसे पा सकते हैं? जो ईश्वर को मंदिर–मस्जिद में देखते हैं । यदि वह मंदिर–मस्जिद में ही रहता है तो शेष जगह किसकी है–

अलहु एकु मसीति बसतु है अवरु मुलखु किसु केरा ।
हिंदू मूरति नाम निवासी दुहु महि ततु न हेरा ।।

कबीर के अनुसार मानव–मानव के बीच सारे कृत्रिम विभेद निःसार हैं । हरेक प्राणी उसी 'एक' की कृति है, उसी की छवि है । अतः सभी समान हैं । ईश्वर ने सबसे पहले ज्योति उत्पन्न की और सारी प्रकृति उसी से व्युत्पन्न है । जब सारे मनुष्य प्रकृति के ही अंग हैं तो उनमें बड़े–छोटे, अच्छे–बुरे का भेद कैसा –

अवलि अलह नुरू उपाइआ कुदरति के सभ बंदे ।
एक नूर ते सभु जगु उपजिआ कउन भले को मंदे ।।

मिट्टी तो एक ही है, पर सिरजनहार ने अनेक प्रकार के रूपाकार देकर सृष्टि की । इसमें न तो मिट्टी के बर्तन का दोष है और न सर्जक का । सृष्टा का सत्त्व तो सबमें बराबर मौजूद है ।

आदिग्रंथ में गैर सिख संत कवियों का योगदान

एक धर्मग्रंथ से ऊपर उठकर यदि देखें तब 'आदिग्रंथ' सही मायनों में 'अनेकता में एकता' का प्रतीक है जो क्षेत्र, जाति, व्यवसाय और साम्प्रदायिक आग्रहों से मुक्त एक खुलेपन का संदेश देता है । 'आदिग्रंथ' के समावेशी आदर्श को दो स्तरों पर स्पष्ट रूप से महसूस किया जा सकता है– संकलित संतो की पहचानगत विविधता तथा भाषायी विशिष्टता ।

अपने एक पद में गुरु अर्जुनदेव संत प्रवृत्ति के विभिन्न लोगों का स्मरण पूरी श्रद्धा के साथ करते हैं :–

सुणि साखी मन जपि पिआर, अजागल उधरिया कहि एक बार।
धनै सेविआ बालबुधि, त्रिलोचन गुर मिलि भई सिधि ।
जैदेव तिआगिओ अंहमेव, नाई उधारिओ सैनु सेव ।
कबीरि धिआइओ एक रंग, नामदेव हरि जीउ बसहि संगि।
रविदास धियाए प्रभ अनूप, गुर नानक देव गोविंद रूप ॥

'आदिग्रंथ' में संकलित गैर सिख संत कवियों का संक्षिप्त परिचय इसप्रकार है–

संत कवि	–	आदिग्रंथ में संकलित पद
जयदेव	–	2 पद
शेख फरीद	–	4 पद 112 श्लोक
त्रिलोचन	–	4 पद
बेनी	–	3 पद
नामदेव	–	61 पद, 2 श्लोक
रामानंद	–	1 पद
कबीर	–	228 पद, 243 श्लोक
रैदास	–	40 पद
सेन	–	1 पद
पीपा	–	1 पद
धन्ना	–	3 पद
भीखन	–	2 पद
मीराबाई	–	1 पद
सूरदास	–	1 पंक्ति
परमानंद	–	1 पद

ऐसा माना जाता है कि ये संत व्यापक स्तर पर भ्रमण करते थे, इसलिए इनकी भाषा में विभिन्न जनपदों के भाषायी तत्व अनायास ही आते गए । इन संतो की बानियों के माध्यम से ये तत्व आदिग्रंथ में भी समाहित किये गए । अत: गुरुमुखी लिपि में संकलित होने के बावजूद 'आदिग्रंथ' की भाषा, समावेशिता का आदर्श प्रस्तुत करती है, जिसमें पंजाबी, मराठी, गुजराती, पूर्वी भारत की बोलियों आदि से भी शब्द ग्रहण किए गए हैं । इस प्रकार, मध्यकालीन भक्ति आंदोलन समस्त मतांतरों के ऊपर मनुष्यता के

स्तर पर विभिन्न परंपराओ के बीच जिस संवाद का प्रतिफल था, उसी का परिणाम 'आदिग्रंथ' में व्याप्त है, जो भारतीय समाज के धार्मिक बहुलतावाद का प्रमाण है ।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

श्याम सुंदर दास : सं. कबीर ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा

डॉ. माताप्रसाद गुप्त : सं. कबीर ग्रंथावली, साहित्य भवन (प्रा.) लिमिटेड – इलाहाबाद

पं. हजारीप्रसाद द्विवेदी : कबीर, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली संस्करण – सन् 1985

पं. परशुराम चतुर्वेदी : कबीर साहित्य की परख भारती भंडार – प्रयाग, संस्करण–सं. 2011 (सन् 1954)

डॉ. केदारनाथ द्विवेदी : कबीर और कबीर पंथ, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

डॉ. पारसनाथ तिवारी : कबीर वाणी– सुधा, राका प्रकाशन इलाहाबाद

डॉ. रामचंद्र तिवारी : कबीर मीमांसा, लोक भारती प्रकाशन – इलाहाबाद

डॉ. धर्मवीर : कबीर के आलोचक, वाणी प्रकाशन – नई दिल्ली

पीताम्बर दत्त बड़थ्वाल, हिंदी काव्य की निर्गुण धारा : अनु. एवं सं. परशुराम चतुर्वेदी, भगीरथ मिश्र, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली

डॉ. राजदेव सिंह, संत साहित्य की भूमिका : लोक भारती प्रकाशन, इलाहाबाद